प्रेस विज्ञप्ति

आचार्य महाप्रज्ञ चातुर्मास व्यवस्था समिति

सरदारशहर 331 401

Email : terapanthpr@gmail.com * Fax : 01564-220 233

अहिंसा प्रशिक्षण शिविर

अमीरों में भी अहिंसा जरूरी : आचार्य महाश्रमण

सरदारशहर 28 जून, 2010

आचार्य महाश्रमण ने देश के 353 अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्रों में गरीबों, बेरोजगारों एवं विद्यार्थियों के द्वारा अहिंसा का प्रशिक्षण प्राप्त करने के साथ अमीरों में भी अहिंसा का विकास हो इसकी जरूरत बताई है। उन्होंने यह जरूरत आज श्रीसमवसरण में रतनगढ़ अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्र में पहुंचे शिविरार्थियों को संबोधित करते हुए उजागकर की। उन्होंने कहा कि लोगों को अहिंसा का प्रशिक्षण दिया जा रहा है यह उपयोगी क्रम है। आज गरीबों और अमीरों दोनों को अहिंसा की जरूरत है। अमोरों के घर परिवारों में भी कलह, लड़ाई-झगड़ों के प्रसंग आते हैं। ऐसे लोगों के लिए पारिवारिक सौहार्द शिविरों का आयोजन होता है, जिसमें सौहार्द के सूत्र प्राप्त कर सकते हैं।

अणुव्रत प्रभारी मुनि सुखलाल ने कहा कि आचार्यश्रो महाप्रज्ञ ने अहिंसा की आवाज को बुलंद किया और इसका व्यवस्थित प्रशिक्षण का क्रम भी प्रारंभ किया। उस क्रम को अहिंसा प्रशिक्षण के रूप में पहचान मिली है। देश के कोने-कोने में इन केन्द्रों के द्वारा अहिंसा की चेतना का विकास करने का प्रयास चल रहा है। अणुव्रत शिक्षक संसद के राष्ट्रीय संयोजक भीखमचन्द नखत ने बताया कि अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्रों में अहिंसा का सैद्धांतिक एवं प्रायोगिक प्रशिक्षण देने के साथ बेरोजगारों को स्वरोजगार का प्रशिक्षण भी दिया जाता है। अब तक सम्पूर्ण देश में हजारों महिला पुरुषों ने इस प्रशिक्षण के द्वारा आत्मनिर्भर बन चुके हैं। रतनगढ़ अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्र को बहिन पुष्पलता ने भी अपने विचार रखे। संचालन मुनि मोहजीत कुमार ने किया।

दूसरों का अहित न सोचें : आचार्य महाश्रमण

सरदारशहर 28 जून, 2010

आचार्य महाश्रमण ने धम्मपद एवं उत्तराध्ययन पर तुलनात्मक प्रवचन करते हुए श्रीसमवसरण में कहा कि दूसरों के प्रति मंगलभावना करें। किसी का अहिन न सोचें। दूसरों का अहित सोचने वाला, विकास करने का चिंतन रखने वाला खुद का अमंगल करता है। जो दूसरों का मंगल सोचने वाला स्वयं का भी मंगल करता है। उन्होंने कहा कि आत्मा की सतत रक्षा करनी चाहिए। इसके लिए आवश्यक है इन्द्रियों का संयम हो। जो अरक्षित

आत्मा है वह जन्म मरण में भ्रमण करती है। आचार्यश्री ने कहा कि दृष्टि सम्यक् होने पर आत्मा की रक्षा हो सकती है। हमारी दृष्टि आत्मा पर होनी चाहिए। मात्र शरीर पर दृष्टि होने पर सम्यक् दृष्टि में कमी आ जाती है। सम्यक्त्व के प्राप्त होने पर ही आचारत्व की प्राप्ति होती है। सम्यक् आचार होने पर धर्म आता है और धर्म का सम्यक् बोध होने पर आत्मा की शुद्धि होती है।

आचार्य तुलसी की 14वीं पुण्य तिथि आज

अणुव्रत आन्दोलन के प्रवर्तक आचार्य तुलसी की 14वीं पुण्य तिथि पर आचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में एक भव्य कार्यक्रम आयोजित किया जायेगा। श्री समवसरण में प्रात: 8.30 बजे से आयोजित होने वाले इस कार्यक्रम में आचार्य तुलसी के जीवन दर्शन एवं मानव उत्थान के आयामों पर प्रकाश डाला जायेगा।

कन्या मण्डल की त्रिदिवसीय कार्यशाला आयोजित

आचार्यश्री महाश्रमणजी के सरदारशहर में पदार्पण के पश्चात महिला मण्डल के तत्वावधान में सरदारशहर कन्यामण्डल की त्रिदिवसीय कार्यशाला का आयोजन साध्वी प्रमुखाश्री कनकप्रभा जी के सान्निध्य में किया गया। जिसमें प्रथम दिवस सर्वपथम साध्वीश्री दर्शनविभाजी के मैत्री की अनुप्रेक्षा करवाई। तत्पश्चात साध्वी श्री शुभप्रभाजी ने सहिष्णुता, पवित्रता, संयम आत्मीयता, सदाचार तथा सामंजस्य के साथ अपने जीवन निर्माण की प्रेरणा दी। साध्वी प्रमुखाश्री जी ने जीवन की कठिनाइयों को शांतिपूर्ण तरीके से सहन करने की प्रेरणा प्रदान की।

कार्यशाला के दूसरे दिन सर्वप्रथम साध्वीश्री दर्शनविभा ने सामंजस्य की अनुप्रेक्षा करवाई। तत्पश्चात साध्वीश्री सुमंगलप्रभाजी ने निश्चय और व्यवहार में सामंजस्य कर जीने की कला सिखाई। सर्वेन्द्रिय संयम मुद्रा का अभ्यास करवाया। साध्वी प्रमुखाश्रीजी ने सहिष्णुता बनने के लिए जीवन जीने के दो सूत्र बताए – (1) कोई बात नहीं (2) परिवर्तन संसार का नियम है। (यह भी बदल जाएगा) साध्वीश्री सौम्ययशाजी ने अनेक घटनाओं के द्वारा सामंजस्य कार्यशाला के तीसरे दिन साध्वीश्री लक्ष्यप्रभाजी ने सामंजस्य के बारे में बताते हुए कहा कि हम जिसके साथ रह रहे हैं उसकी मन: स्थिति कैसी है उसे जानकर उसी के साथ वैसा ही व्यवहार करें। तत्पश्चात् कन्याओं केा पांच ग्रुप समूह में विभाजित किया। समन्वय विषय पर एक स्क्रिप्ट के माध्यम से अपने विचारों की अभिव्यक्ति दी। साध्वीश्री कल्पलताजी अपने विचारों को व्यक्त किया। साध्वी प्रमुखाश्रीजी ने फरमाते हुए कहा – अपने जीवन का सही उपयोग करें।

कन्याओं ने तीनों ही दिन कार्यशाला के बाद आचार्य प्रवर के दर्शन कर उनसे प्रेरणा पाथेय प्राप्त किया। आचार्यप्रवर ने जीवन में अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए बुभुषा, जिज्ञासा व चिकित्सा की प्रेरणा दी। आचार्यप्रवर ने फरमाया ज्ञान के साथ श्रद्धा का भी विकास हो। सबको अपने देव, गुरु, धर्म पर, आत्मा पर नैतिक मूल्यों पर, आदर्शों पर श्रद्धा रखनी चाहिए। तपस्या के माध्यम से कठोर जीवन जीने व संघर्षों का झेलने का अभ्यास करना चाहिए। साथ ही आचार्य प्रवर ने कन्याओं को प्रतिक्रमण सीखने की प्रेरणा दी।

इस कार्यशाला में 65 कन्याओं की उपस्थिति रही।

शीतल बरड़िया (मीडिया संयोजक)